ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 8.4
IJAR 2021; 7(11): 157-161
www.allresearchjournal.com
Received: 07-09-2021
Accepted: 09-10-2021

श्रवण कुमार
शोधार्थी, स्नात्कोत्तर मैथिली विभाग, तिलकामाँझी भागलपुर विश्वविद्यालय, भागलपुर, बिहार, भारत

Corresponding Author:
श्रवण कुमार
शोधार्थी, स्नात्कोत्तर मैथिली विभाग, तिलकामाँझी भागलपुर विश्वविद्यालय, भागलपुर, बिहार, भारत।

दाम्पत्य-जीवनक कथामे चित्रित समस्या आ तकर समाधान एवं समाज पर प्रभावक विश्लेषण

श्रवण कुमार

प्रस्तावना

मैथिली कथा-साहित्यमे अनेको एहन कथाकार लोकनि भेलाह अछि जे अपन कथामे दाम्पत्य-जीवनकेँ विभिन्न क्षणक चित्रण कयलाह अछि आ सभ कथाकार लोकनि अपन-अपन प्रतिभाक परिचय देलाह अछि। हिनक सभक कथाक अध्ययन कयलापर ज्ञात होइत अछि जे दाम्पत्य-जीवनक कथामे किछु कथाकार जाहि समस्याकेँ देखओलनि अछि, ताहि समस्याक समाधान सेहो कयलनि अछि मुदा ई काज सभ कथाकार नहि कयने छथि। एहि ठाम मैथिलीक प्रमुख कथाकारक कथामे दाम्पत्य-जीवनक कथामे चित्रित समस्या आ तकर की समाधान अछि एवं ओकर समाजपर की प्रभाव पड़ल अछि, तकर विश्लेषण निम्न रुपेँ अछि-

सभसँ पहिले हम किरण जीक 'मधुरमनि' कथाकेँ लैत छी। एहि कथामे जे समस्या आयल अछि ओ पति-पत्नीक बीच संवादक गलत तरीका आ एकर कारण अछि अशिक्षा वा स्वविवेक। देखल जाय कथाकारक शब्देँ-

"भानस भेलै ?"

"हँ । भानसे टा ? नौ टा तीमन-सचार लागल राखल-ऐ । काज ने धंधा, तीन रोटी बंधा । दरबज्जापर बैसल-बैसल बात गढ़त रहता...भानस भेलै ? भानस भेलै ?"

मोचनकेँ दोसर वाक्य बजबाक साहस नहि भेलैक। नाङड़। बाम हाथ सुखायल सन। बोनि-बुता किछु करबाक सामर्थ्य नहि। दरबज्जापर बैसल-बैसल जौड़ बाँटल करय आ कखन-कखनो बाड़ी-झाड़ीमे खुरपी ल'क' कमाय-कोड़य।

गुजर चलैत छलैक बहुएक बर्ष। बहु छलैक बड़ मेहनतिया-जँघगरि तेहने। भरि दिन एहि आङन ओहि आङन नचिते रहैक। अप्पन कमाइ खाक' नाङड़-लुल्हक तरमे किएक बसैत छलि ओ, सैह सबकेँ आश्चर्य होइ।

मोचन हिस्सख तँ छलैक बहुत बात सुनबाक, मुदा नहि जानि ओहि दिन किएक असहाज भ' गेलैक। विचारलक- नै काज कयल होयत, तँ धिया-पुताकेँ खेलाओल-थथमारल होयत कि ने? आ सेहो नहि होयत तँ भीखे माङब। घरोमे तँ भीखे खाइ छी। आनक कमाइ भीखे थिक की ने? मारय मुहँ एहन जीवनकेँ।

मोचन चुप्पे अपन जे फाटल-पुरान छलैक तकर मोटरी बान्हि काँखमे लटका लाठीपर दैत विदा भ' गेल टीसनपरक।[1]

शिक्षा जीवनक एक टा महत्वपूर्ण अंग थिक। कोनो विषयक जानकारी व्यक्तिकेँ एक प्रकारक सुरक्षा प्रदान करैत अछि। दाम्पत्य-जीवन मे प्रवेश करबासँ पहिले जँ दाम्पत्य-जीवनक

महत्वपूर्ण जानकारी द' देल जाय त' बहुत सीमा धरि दाम्पत्य-जीवन सही रूपें चलि सकैत अछि। लोककें व्यवहारिक होयब आवश्यक होइत अछि। कोन क्षण, कोन व्यक्तिसँ, केहन व्यवहार करबाक चाही? एहि बातक शिक्षा त' सभकें होयबाक चाही। जँ मधुरमनि मोचनकें ओतेक कठोर शब्दें उत्तर नहि देने रहितैक त' संभवतः ई कथा किछु आओर रूपक होइत। एहि प्रकारक व्यवस्थाक प्रभाव समाजपर नाकारात्मक पड़ैत अछि। जँ समाजकें सही दिशा प्रदान करबाक अछि त' व्यक्ति-व्यक्तिक व्यवहारकें सही करय पड़त। एहि कथाक प्रभाव समाजपर पड़ैत अछि आ समाज प्रभावित होइत अछि। पति-पत्नीक बीच सौहार्द्यपूर्ण व्यवहार होयबाक चाही। एक-दोसराक महत्व आ मानकें ध्यानमे रखबाक चाही। यदि कोनो बातकें ल' क' मन अशांत होइत अछि त' ओहि बातकें सहजताक संग एक-दोसरासँ साझा करबाक चाही आ ओकर समाधान खोजबाक चाही।

हरिमोहन झाक 'पाँच पत्र' कथामे पहिल समस्या जे देखबामे अबैत अछि, ओ अछि - स्त्रीक प्रति पुरूषक नकारात्मक सोच। एहि कथामे जेना-जेना दाम्पत्य-जीवनक समय बितैत अछि, तेना-तेना स्त्रीक प्रति संबोधनक स्वर बदलि रहल अछि। एकर कारण बुझना जाइत अछि जे समयक संग स्त्रीक महत्वकें कम क' क' आँकल जा रहल अछि। एहि प्रकारक व्यवहार मानवोचित नहि बुझना जाइत अछि कारण जीवन-साथीक प्रति ई व्यवहार कोनो दृष्टिकोणसँ सही नहि बुझना जाइत अछि। देखल जाय कथाकारक शब्दें-

दड़िभंगा
२-१-१६

प्रियतमे,

अहाँक लिखल चारि पाँती चारि सय बेर पढ़लहुँ। तथापि तृप्ति नहि भेल। आचार्यक परीक्षा समीप अछि। किन्तु ग्रन्थमे कनेको चित्त नहि लगैत अछि। सदिखन अहींक मोहिनी मूर्ति आँखिमे नचैत रहै अछि।

राधा रानी ! मन होइ अछि जे अहाँक ग्राम वृन्दावन बनि जाइत जाहिमे केवल अहाँ ओ हम राधा-कृष्ण जकाँ अनन्त काल धरि विहार करैत रहितहुँ। परन्तु हमरा ओ अहाँक बीचमे भारी भदवा छथि अहाँक बाप-पित्ती जे दू मासक बाद फगुआमे हमरा आबक हेतु लिखै छथि। ६० वर्षक बूढ़कें की बूझि पड़तनि जे ६० दिनक विरह केहन होइ छैक।

प्राणेश्वरी, अहाँ एक बात करू। माघी अमावस्यामे सूर्यग्रहण लगै छै। ताहिमे अपना माइक संग सिमरियाघाट आउ। हम ओहिठाम पहुँचि अहाँकै जोहि लेब। हँ, एकटा गुप्त बात लिखै छी। जखन स्त्रीगण ग्रहण-स्नान कर' चलि जैतीह, तखन अहाँ कोनो लाथ क' क' बासापर रहि जायब। हमर एकटा संगी फोटो खीच' जनै अछि। तकरासँ हम अहाँक फोटो खिचबायब। देखब, ई बात क्यो बूझय नहि। नहि तँ अहाँक बाप-पित्ती तेहन छथि से जनले अछि।

हृदयेश्वरी, हम अहाँक फरमाइशी वस्तु (चन्द्रहार) कीनिक' रखने छी। सिमरियामे भेट भेलापर चुपचाप द' देब। मुदा क्यो जानय नहि। हमरा बापकें पता लगतनि तँ खर्चे बन्द क' देताह। हँ, एहि पत्रक जबाव फिरती डाकसँ देब।[2]

दोसर पत्रमे प्रिये, तेसर पत्रमे शुभाशीर्वाद, चारिम पत्रमे आशीर्वाद आ पाँचम पत्रमे कोनो संबोधन नहि देखबामे आबैत अछि।s

मनमोहन झाक 'झगड़ा' कथामे जे समस्या देखाय पड़ैत अछि, से ओ अछि- पति-पत्नीक बीच एक-दोसराकें बुझबामे कमी। अपन-अपन बात एक-दोसरासँ मनेबाक प्रयास। कोन काज आवश्यक अछि, एकरा बुझबाक लेल तैयार नहि। अपन इगोकें सर्वोपरि मानब। एहि समस्याक समाधान अछि जे काजक महत्वकें एक-दोसराकें सहज भावमे बतायब आ कठोर शब्दक प्रयोगसँ बचबाक चाही। अपन कर्तव्यक पालन करबामे पाछू नहि हटबाक चाही। देखल जाय कथाकारक शब्दें-

"इएह प्रश्न क' उठलीह- "की अहाँ हमर बात नहिऐ मानब?"

हम कहलियनि- "अहाँ नहि बुझैत छिऐक। मोकदमाबला बात थिकैक। यदि कनियो चूकि जायव, त जितबाक कोनो टा आशा नहि।" ओ कहल - "अहाँ एहिना हमरा गामक नामे लाथ ध' आन ठाम चल जाइत छी।" हम कहलियनि-"से अहाँकै हमरापर एतेक सन्देह अछि तँ हम आदमी संग क' दैत छी। कल्हुके गाड़ीसँ तमोरिया चलि जाउ, किन्तु यदि अहाँक कोनो खगता रहितैक तँ नैहरेसँ लेब' अबितय ने।

हम बजबामे किछु कठोर शब्द बाजि गेलहुँ अवश्य, किन्तु ओकर सम्हारबाक हेतु हमरा असामयिक हास्यक शरण लेब' पड़ल। किन्तु हमर बाण हुनक मर्मकें आहत क' चुकल छल, जकर साक्षी हुनक आँखिक नोर छल। गहरित कण्ठसँ कहलनि-"बेस तँ जखन हमरा गामक सभ मरिये गेल, तखन हम नहि जायब। एहिले' हमरा गामकै उकटबाक कोन कार्ज छैक।"

दुर्बल प्रतिपक्षी यदि बुद्धिवादसँ हारि जाइछ तँ ओ कोनो अप्रासंगिक गप्प उठबैछ जकर ने कोनो आदि होइछ ने अन्त।

हम कहलियनि-"हमर से तात्पर्य तँ नहि छल। हमरा मोकदमाक तारीख अछि आ अहाँ गाम जयबा ले' जिद्द ठनने छी, सेहो अपनहि टा नहि, हमरो चल' कहैत छी।"

ओ-"तँ हमरासँ पैघ अहाँकै मोकदमे भेल।"

अपन स्वजन यदि स्नेहक अनुचित लाभ उठब' चाहौक, तँ दुःख तथा क्रोध एकहि बेर होइत छैक। हमरा कह' पड़ल-"से अहाँ जे बुझी।" एकर बाद दस-बारह मिनट धरि ओत' छलहूँ, किन्तु हमर प्रयासो कयला सन्ता हुनक अश्रुक स्त्रोत बन्द

नहि भेल। अन्तमे इएह बुझबाक योग्य भेल जे जखन हुनक बात नहिये रहलनि तखन हमरासँ बाजिए क' की। हुनक आँखि एकर द्योतक छल जे आब फेर हम जन्म भरि अहाँसँ नहि बाजब। हमरा स्टेशनपर अयबाक छल। बुद्धि कोनो कार्य नहि करय। अन्तमे क्रोध भ' उठल। हम एहन सन क्रम करैत बाहर चल अयलहुँ जे अहाँ नहि बाजब तँ कोनो सूर्य-चन्द्रमा ते नहिये डूबि जयताह। जावत अहाँ नहि बाजब तावत हमरे कोन गर्ज अछि।"[3]

एहि कथाक प्रभाव समाजपर ई पड़ैत अछि जे दाम्पत्य-जीवनमे अनावश्यक वार्तालापसँ बचबाक चाही। जे एहि कथाकेँ पढ़ने-सुनने छथि, हुनकामे ई विवेक निश्चित रूपसँ जागृत भेल हेतनि। जखन लोक चेतैत अछि त' समाज सुधरैत अछि।

उपेन्द्रनाथ झा 'व्यास'क 'रुसल जमाय' कथामे पति-पत्नीक बीच व्यवहारकेँ ल' क' विवाद उत्पन्न भेल अछि। एहि कथामे संवादक समस्या अछि। पति-पत्नीक बीच कोनो चीज, वस्तुकेँ ल' क' व्यक्तिगतक विचार निरर्थक थीक। दूनू प्राणी अपरिपक्व अवस्थाक छल। तेँ विचार-व्यवहारमे प्रौढ़ता होयबाक कोनो प्रश्ने नहि उठैत अछि।

एहि कथामे उठल समस्याक निराकरण अछि जे बाल-विवाहपर पुरा-पुरी रोक होयबाक चाही संगहि एहिक लेल जनजागरूकताक कार्यक्रम होयबाक चाही आ संगहि शिक्षित करबाक दिस बेसी ध्यान देबाक चाही।

एहि कथाक प्रभाव समाजपर साकारात्मक पड़ैत अछि। आब बाल-बिआहक घटना बड़ कम देखबामे अबैत अछि। आब मन, तन दूनूसँ सियान भेलापर बिआह होइत छैक मुदा मनपसंद लोक नहि भेटलापर संबंध-विच्छेद वा तालाक सेहो भ' जाइत छैक जे समाजक लेल नीक बात नहि अछि।

मणिपद्मक 'बुझले छल' कथामे बेमेल बिआहसँ समस्या उत्पन्न भेल अछि। एहि कथामे एक टा नव युवतीकेँ बूढ़ लोकसँ बिआह करा देल जाइत छैक आ युवती नहिरेमे रहि क' गुजर-बसर करबाक लेल खादी-भंड़ारमे काज करैत अछि आ ओहि ठाम ओकरा सूचना भेटैत छैक जे ओकर पति मरि गेलैक। ई सुनि ओकरा कोनो दुख नहि होइत अछि। आब प्रश्न उठैत अछि जे पूरा जीवन ओहि युवतीक पुरूष बिनु कोना कटतैक?

एहि कथामे उठल समस्याक निराकर अछि जे एहि प्रकारक बिआहकेँ पूर्णतः रोक लगेबाक चाही आ बिधबाक बिआहक व्यवस्था करबाक चाही जाहिसँ समाजमे व्याभिचार नहि पसरि सकय आ बिधबा सम्मानपूर्वक जीवन जीब सकय।

एहि कथाक प्रभाव समाजपर साकारात्मक पड़ैत अछि। समाजमे एहि प्रकारक बिआह आब देखबामे नहि अबैत अछि। आब समाजमे बेमेल बिआहक प्रथा समाप्त भ' गेल अछि।

मायानंद मिश्रक 'मिझाइत दीप' कथामे परिवारमे जुति ककर चलबाक चाही, बूढ़क वा नवयुवकक? एहि समस्याकेँ देखाओल गेल अछि आ एकर समाधान सेहो कयलनि अछि। एहि कथामे बापसँ बिनु बिचारने बेटा अपन संतानक छठिहारमे गामक दस टा लोककेँ नोत' चाहैत छथि जाहिपर बूढ़ा तामस करय लगैत छथि। तखन बूढ़ी बूढ़ाकेँ बुझबैत छथिन जे आब बेटा कमाय-खटाय छथि त' खर्च करय दिअनु। हम सब मिझाइत दीप छी।

एहि कथाक प्रभाव समाजपर साकारात्मक पड़ैत अछि। एहि कथाक माध्यमसँ कथाकार ई संवाद द' रहल छथि जे परिवर्तन संसारक नियम थीक। ई सब ठाम लागू होइत अछि। चाहे घर हो वा परिवार। सभ दिन एके लोकक जुति नहि चलैत छैक। तेँ समय रहैत परिवर्तनकेँ स्वीकार कयलासँ कष्ट नहि होइत छैक।

रामदेव झाक 'मनुक्ख' कथामे कष्ट, अभाव, उपासमे जीबैत दाम्पत्य-जीवनक संग बेरोजगारीक समस्याकेँ उठाओल गेल अछि। कहबीक परि भेल अछि- 'जाहि डरे भिन्न भेलहुँ, सएह पड़ल बखरा'। बेरोजगारीकेँ दूर क' अपन परिवारक नीक जकाँ भरण-पोषण करबाक लेल शहर जा क' रिक्सा चलबैत अछि मुदा ओकरोसँ ओतेक नहि उपार्जन होइत छैक, जतेक ओकरा बेगरता छैक। एहि समस्याक समाधान अछि जे सरकारी स्तरपर कौशल विकासक जे क्रार्यक्रम चलि रहल अछि ताहिमे एहन-एहन लोककेँ खोजि क' जोड़बाक चाही आ आवश्यता पड़लापर बिनु व्याजक राशि देल जाय जाहिसँ ओकर सभक समस्या दूर भ' सकय।

एहि कथाक प्रभाव समाजपर साकारात्मक पड़ैत अछि। एहन-एहन कथाक माध्यमसँ समाज, सरकारपर प्रभाव पड़ैत अछि जाहिसँ अन्तोदय योजना, उज्ज्वला योजना, मनरेगा योजना आदि गरीब लोकक लेल अबैत अछि।

हंसराजक 'घोर' कथामे खंडित दाम्पत्य-जीवनक संग अशिक्षा, समाजिक सुरक्षाक समस्याकेँ उठाओल गेल अछि संगहि विधि-व्यवस्थापर सेहो प्रकाश देल गेल अछि। एहि कथामे निर्दोष लोककेँ दोषी बना, ओकरा सजा द' देल जाइत अछि।

एहि समस्याक समाधान अछि जे सरकारी तंत्रमे पसरल भ्रष्टाचारक उन्मूलन दिस सरकार आ समाज दूनूकेँ सजग होयबाक चाही आ जे एहन कार्य करैत अछि ओकरा लेल कानूनमे कठोरसँ कठोर दंडक प्रावधान कयल जाय आ आर्थिक दंडक विशेष व्यवस्था होयबाक चाही।

एहि कथाक प्रभाव समाजपर साकारात्मक पड़ैत अछि। लोक अपन बच्चाकेँ भार नहि बुझि अपन कर्तव्य बुझैत छथि।

प्रभास कुमार चैधरीक 'अरगनी' कथामे आर्थिक दृष्टिकोणसँ कमजोर दाम्पत्य-जीवनक समस्याकेँ देखाओल गेल अछि। एहि कथामे सभसँ पैघ समस्या आर्थिक अछि। घरक खर्च

बेसी छैक आ आमदनी सीमित। कर्जमे डूबल छथि आ उपरसँ धीया-पुताक पढ़ाइक खर्च, से अलग। कम टाकामे घर चलायब कठिन भेल छैक आ एहि बातकेँ ल' क' पति-पत्नीक बीच तनाव बढ़ल छैक। दोसर दिस बेरोजगार बेटाक बिआह कयने रहैत छैक आ पुतहुक इच्छा रहैत छनि जे पतिक संग नगरमे रहथि मुदा घरबालाकेँ कोनो नोकरी नहि रहबाक कारणेँ हिनका परदेशमे संग रहबामे बाधा होइत छैक। देखल जाय कथाकारक शब्दें-

"- की भेलौक अछि माइ।- हमरा किछु नै बुझाइत अछि। माइ कागज कलम हमरा हाथमे दैत कहैत अछि-लिखह।'

बहुत रास सामान सभ, ओकर मात्रा आ मूल्य माइ लिखबैत अछि, हम लिखैत जाइत छी।

बड़का फिरिस्त तैयार भ' जाइत अछि।

- आब तोही कह' जे महीना भरिक हेतु एहिमे कोन वस्तु बेसी छैक। माइ पुछैत अछि।

हम फेर एक बेर फिरिस्त पढ़ैत छी- ई तँ बड़ कम छौक माइ। -आब एकर दाम जोड़ह-माइ हमर बात जेना नै सुनैत अछि। हम मूल्यक टोटल करैत छी- दू सय भेलौक।

- आब कनेक अपन बापकेँ बुझाबह। हम डेढ़ सय मँगैत छिअनि तँ कहैत छथि जे आर कम करू। एहिसँ कममे कोना चलतैक, तोंही कह' ?

हम दादा दिस तकैत छी। ओ हमरा नै देखि रहल छथि। ओ ककरो नै देखि रहल छथि। दृष्टि देवाल पर अटकल छनि। कहैत छथि-चलत से तँ हम नै कहैत छी, कहै छी जे चलाब' पड़त।

कनेक काल चुप्प रहि हमरासँ कहैत छथि-माइक फेरिस्त तँ लिखि चुकलह, आब कनेक हमरो फेरिस्त लिखि दैह।

हम फेर कलम उठा लैत छी। दादा लिखबैत छथि-

दरमाहासँ आमदनी-350 रुपैया

पिछला कर्जाक किश्त कटौती-200 रुपया

सुनील (हमर बहनोइ) क पढ़ाइ-60 रुपया

लाइफ इन्स्योरेंस प्रीमियम-40 रुपया

रमेश (हमर छोट भाइ) क पढ़ाइ-50 रुपया

हम हाथ रोकि लैत छी-आब तँ एक्को पाइ नै बाँचल।।

-सैह तँ हमहूँ कहैत छिअनि तोहर माइकेँ जे एक्को पाइ नै बँचैत अछि तँ हम कहाँसँ दिअ'1- दादा कहैत छथि।"[4]

उपरोक्त समस्याक समाधान अछि जे जीवनमे धन उपार्जनक हेतु सदिखन साकांक्ष रहबाक चाही आ जाहि हिसाबेँ आमदनी अछि, ओहि हिसाबँ खर्च करबाक चाहि।

एहि कथा प्रभाव समाजपर साकारात्मक पड़ैत अछि। एहि कथासँ लोककेँ सीख भेटैत छैक जे "तेते पाव पसारिए जेते लम्बी सौर।"

गंगेश गुंजनक 'युद्धे युद्ध' कथामे बाढ़िक प्रकोपसँ बचबाक समस्याकेँ उठाओल गेल अछि आ तकर समाधान सेहो कयने छथि। बाढ़िक समस्यासँ बचबाक लेल कथानायककेँ कलकत्तामे काज करैत टाका जमा करबाक उद्देश्य घर बनायबाक चर्चा सेहो कयलाह अछि। देखल जाय कथाकारक शब्दें-

"अनमन पत्नीक सोचलहेक अनुसार किछु नहि भेलैक। वर्षहु ओ रहि गेल कलकत्ता। रुपैया सेहो कमायल। मुदा मासे-मासे स्त्रीकेँ किछु खास राशिक मनिआर्टी करबाक अतिरिक्त किछु नहि कऽ सकल। वर्ष-दू-वर्षमे दस दिनलेल गाम गेल। सन्तानहीन अपन स्त्रीकेँ बोल-भरोस देलक आ लटकल ओलतीमे बाँसक नव पाढ़ि-खुट्टा लगा कऽ गामसँ घूमि आयल।

-हे कोनो ब्याँत कऽ कऽ इँटेबाक कुर्सी दिया दियौक। नै तँ एना साले-साले खट्रो बदलने किछु फल नहि।'

-तकरे इन्तिजाममे लागल छी। किछु टाका जमा भऽ जाय तँ दूटा कोठली ठाढ़ का लेब इँटेबेक। ऊपर खपड़ो रहतै तँ नहि कोनो'... पत्नी सन्तुष्ट भऽ गेलीह, भविष्यक प्रतीक्षामे। हालेमे मरि गेल छओ मासक बच्चाक व्यथा हुनका कम भऽ जाइन-नीक थिक। आब जे आओत तकर भाग्य नीक रहतैक। पक्कामे रहत। ओकरा जकाँ वर्षामे तँ नहि भीजत। जयन्त भदवारि बिता का जाय लेल तैयार। आब दिने कतेक बाँकी? रुपैया-पैसा ततबा जोड़ि लेलक अछि जे माटिक गिलेबापर पजेबाक देवाल ठाढ़ कऽ लिअय।

ओकरा मनमे बसात जकाँ उत्साह भरि गेलैक। पत्नीक चिट्ठी अयलइए। एहि बेर जयन्तकेँ अवश्य निरोग आ दीर्घायु बेटा होयतैक। ओकरा अयबाक समय तखन होयतैक जखन ओ पक्का घर ठाढ कऽ चुकत।"[5]

एहि कथाक प्रभाव समाजपर साकारात्मक पड़ैत अछि। एहि कथामे ई देखाओल अछि जे सरकारपर आश्रित नहि रहि, अपन बल-बुतापर समस्याक समाधान करबाक चाही कारण कहल गेल छै- 'जकर चूबै छै, सैह छरबैत अछि।'

धूमकेतुक 'अगुरबान' कथामे जे समस्या उठल अछि, ओकर सही समाधान नहि कयल गेल अछि कारण बूढ़ पंडितक सोझा पेटक भूख पहाड़ बनि क' आगूमे ठाढ़ छलैक। बेटा चोरि करैत छैक। समयपर भोजन नहि भेटलासँ बीमार पड़ि जाइत छैक आ एक त' वृद्ध देह, दोसर बीमार। एहन स्थितिमे नवयुवतीसँ विवाह करब काल होइत छैक। ओकर दैहिक तापकेँ शांत करबाक सामर्थ बूढ़मे नहि छलनि। ओ त' विआह एहि दुआरे करने छलाह जे मौगी कमा क' आनक त' दू साँझ नीकसँ खायब। एकर बदलामे भने ओकर अपन देह केकरो सोझा कियाक नहि पसारए पड़ैक।

बेटा लेल सतमाय छलैक मुदा ओ कखनो नहि चाहैत छलैक जे ओ हवेलीमे जाय कारण ओ जानैत छलैक जे हवेलीमे गेलासँ की हेतैक? जे हेतैक से बेटाकेँ स्वीकार नहि छलैक। तैँ जहिया पता चललै जे ओकर सतमाय पेटसँ छै त'

कोदारिसँ दोखरि दैत छैक। एहि समस्याक समाधान ई नहि अछि जे देह बेचि ककरो पालन-पोसब करबाक चाही। एहि समस्याक समाधान ओकरा कोनो रोजगारक बाट देखाय सेहो भ' सकैत छलैक। तेँ एहि ठाम धूमकेतु कथाकेँ सही दिशा प्रदान नहि कयलाह अछि।

संदर्भ सूची

1. कथा संग्रह - सं. डा. अमरेश पाठक, मोहन भारद्वाज; मैथिली अकादमी, पटना ; चतुर्थ संस्करण, 2007; पृष्ठ संख्या- 13
2. उपरोक्त, पृष्ठ संख्या- 7
3. उपरोक्त, पृष्ठ संख्या- 36
4. मैथिली कथा संचयन- सं. शिवशंकर श्रीनिवास ; नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया; 2004, पृष्ठ संख्या- 107
5. मैथिली कथा शताब्दी संचय- सं. रामदेव झा, इन्द्रकान्त झा; साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली; 2010, पृष्ठ संख्या- 234